भारत सरकार

परमाणु ऊर्जा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1245

जिसका उत्तर दिनांक 09.02.2022 को दिया जाना है

रेयर अर्थ खनन

1245. श्री एंटो एन्टोनी :
श्री बैन्नी बेहनन :
एडवोकेट अदूर प्रकाश :
श्री के. सुधाकरन :

क्या **प्रधान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार की मंशा रेयर अर्थ खनन क्षेत्र का आंशिक अथवा पूरी तरह से निजीकरण करने की है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या सरकार की मंशा देश में रेयर अर्थ खनिजों के लिए स्वदेशी प्रसंस्करण इकाइयों में अंतर को दूर करने और चीन के प्रोसेसर पर निर्भरता को कम करने की है;

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ङ) क्या सरकार की मंशा रेयर अर्थ खनिज क्षेत्र में भारत के रणनीतिक और वाणिज्यिक हितों का समर्थन के लिए स्वदेशी प्रयोगशाला से उत्पाद पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में सहायता करने के लिए कोई नीतियां बनाने का है; और

(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

<u>उत्तर</u>

<u>राज्य मंत्री, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन तथा प्रधान मंत्री कार्यालय (डॉ. जितेन्द्र सिंह)</u> :

(क) तथा (ख) भारत में दुर्लभ मृदा (रेअर अर्थ) (आरई) का प्रमुख अयस्क बीएसएम रेत है, जिसके भीतर एक निर्धारित पदार्थ मोनाज़ाइट होता है । मोनाज़ाइट यूरेनियम, थोरियम और आरई का एक फॉस्फेट यौगिक है । रेडियोसक्रियता से संबद्ध होने के कारण खनन, प्रसंस्करण और परिष्करण सरकारी नियंत्रण में रखे जाते हैं और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) के तहत एक सीपीएसई द्वारा किया जाता है । रेडियोसक्रियता की मुक्ति के बाद, रेयर अर्थ ओपन जनरल लाइसेंस (ओजीएल) के तहत उपलब्ध है और इसलिए स्वतंत्रता के बाद से निजी क्षेत्र सहित सभी के लिए उपलब्ध है । हालांकि, आज तक किसी भी निजी क्षेत्र ने इस क्षेत्र में रुचि नहीं दिखाई है । वास्तव में, रक्षा, इलेक्ट्रिक

वाहन और हाइब्रिड वाहन, रोबोटिक्स, सीएनसी प्रौद्योगिकियां, जैसे, आरई उत्पादों के लिए भारत में औद्योगिक मांग या तो अनुपस्थित है या प्रारंभिक अवस्था में है । इसके अलावा, बीएसएम के दोहन के लिए एक नीति निर्धारित करके 1998-2019 से निजी व्यावसायिकों के लिए यह क्षेत्र खुला था, जिसमें अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, एफडीआई लाने और मूल्य श्रृंखला में उद्योग स्थापित करने का अवसर प्रदान किया गया । हालाँकि, उपरोक्त में से कोई भी उद्देश्य पूरा नहीं हुआ ।

(ग) तथा (घ) रेयर अर्थ में सत्रह तत्व होते हैं और इन्हें हल्के आरई तत्वों (एलआरईई) और भारी आरई तत्वों (एचआरईई) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है । कुछ आरई जो भारत में उपलब्ध हैं, जैसे लैंथेनम, सेरियम, नियोडिमियम, प्रेजोडिमियम और समैरियम, आदि आपूर्ति अधिशेष में हैं, जबकि डिस्प्रोसियम, टेरबियम, यूरोपियम जिन्हें एचआरई के रूप में वर्गीकृत किया गया है, वे निष्कर्षणीय मात्रा में भारतीय निक्षेप में उपलब्ध नहीं हैं । प्रयोगशाला पैमाने में अनुप्रयोगों के लिए एचआरईई का आयात अल्प मात्रा में है । इसलिए, एचआरईई के लिए चीन पर निर्भरता केवल छोटी मात्रा में है । सरकार देश के भीतर आरई की खपत के लिए क्षमता निर्माण पर सक्रिय रूप से काम कर रही है । इस संबंध में, हाल ही में, भारतीय उद्योगों, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों में आरई की खपत बढ़ाने के लिए, सरकार ने भारी उद्योग मंत्रालय के अधिसूचना संख्या एस.ओ. 4632 (ई) दिनांक 9 नवंबर, 2021 की मद संख्या 6 के माध्यम से एक पीएलआई योजना की घोषणा की है ।

(ङ) तथा (च) सरकार की रणनीतिक और वाणिज्यिक दोनों क्षेत्रों से घरेलू मांग को पूरा करने के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकसित करने की योजना है । भारत में आरई ऑक्साइड/यौगिकों के खनन, प्रसंस्करण, निष्कर्षण, परिष्करण और उत्पादन के मामले में क्षमता और सामर्थ्य पर्याप्त रूप से उपलब्ध हैं, जो रेडियोसक्रिय तत्वों से जुड़े प्रचालन के कारण सरकारी नियंत्रण में है । स्वतंत्रता के बाद से निजी क्षेत्र सहित सभी के लिए रेडियोसक्रियता-मुक्त ऑक्साइड / यौगिकों के रूप में आरई उपलब्ध है । जहां तक प्रयोगशाला से उत्पाद परितंत्र का संबंध है, एक रेयर अर्थ थीम पार्क की स्थापना की जा रही है, जो प्रयोगशाला में प्रमाणित वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रायोगिक स्तर पर उन्नत करेगा और वाणिज्यिक प्रचालन स्थापित करने के इच्छुक उद्योगों को इसका निदर्शन करेगा । इसके अलावा, थीम पार्क भविष्य के कार्यबल को विकसित करने के लिए कौशल विकास गतिविधियों का भी संचालन करेगा । इसके अलावा, भारतीय संसाधनों से नियोडिमियम धातु (नियोडिमियम स्थायी चुंबक बनाने के लिए) का उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी को उन्नत करने के लिए ऊष्मायन मोड के तहत एक महत्वाकांक्षी उद्योग विकसित किया जा रहा है ।

* * * * *